



NATIONAL SENIOR CERTIFICATE EXAMINATION
NOVEMBER 2020

HINDI SECOND ADDITIONAL LANGUAGE: PAPER I

MARKING GUIDELINES

Time: 2 hours

100 marks

These marking guidelines are prepared for use by examiners and sub-examiners, all of whom are required to attend a standardisation meeting to ensure that the guidelines are consistently interpreted and applied in the marking of candidates' scripts.

The IEB will not enter into any discussions or correspondence about any marking guidelines. It is acknowledged that there may be different views about some matters of emphasis or detail in the guidelines. It is also recognised that, without the benefit of attendance at a standardisation meeting, there may be different interpretations of the application of the marking guidelines.

भाग
प्रश्न एक
स्वामी विवेकानंद

- १.१ एक समान्य परिवार में जन्म लेने वाले नरेंद्रनाथ ने अपने ज्ञान तथा तेज के बल पर विवेकानंद बने
- १.२ वह बाल्यकाल से ही आध्यात्मिक व्यक्ति थे और हिन्दू भगवान की मूर्तियों (भगवान शिव, हनुमान आदि) के सामने ध्यान किया करते थे। वह अपने समय के घूमने वाले सन्यासियों और भिक्षुओं से प्रभावित थे। वह बचपन में बहुत शरारती थे और अपने माता-पिता के नियंत्रण से बाहर थे। वह अपनी माता के द्वारा भूत कहे जाते थे, उनके एक कथन के अनुसार
- १.३ वह बहुत धार्मिक व्यक्ति थे हिन्दू शास्त्रों (वेद, रामायण, भगवत गीता, महाभारत, उपनिषद, पुराण आदि) में रुचि रखते थे। वह भारतीय शास्त्रीय संगीत, खेल, शारीरिक व्यायाम और अन्य क्रियाओं में भी रुचि रखते थे। उन्हें विलियम हैस्टे (महासभा संस्था के प्राचार्य) के द्वारा "नरेंद्र वास्तव में एक प्रतिभाशाली हैं" कहा गया था। वह हिंदू धर्म के प्रति बहुत उत्साहित थे और हिन्दू धर्म के बारे में देश के अन्दर और बाहर दोनों जगह लोगों के बीच में नई सोच का निर्माण करने में सफल हुए। वह पश्चिम में ध्यान, योग, और आत्म-सुधार के अन्य भारतीय आध्यात्मिक रास्तों को बढ़ावा देने में सफल हो गए। वह भारत के लोगों के लिए राष्ट्रवादी आदर्श थे।
- १.४ उनके इन्हीं कार्यों के लिए चक्रवर्ती राजगोपालाचारी (स्वतंत्र भारत के प्रथम गवर्नर जनरल) ने कहा कि स्वामी विवेकानंद ही वह व्यक्ति थे, जिन्होंने हिन्दू धर्म तथा भारत को बचाया था। उन्हें सुभाष चन्द्र बोस के द्वारा "आधुनिक भारत के निर्माता" कहा गया था।
- १.५ परम बलिदान देना है। एक बड़े कारण के लिए भी अपने जीवन को दे रहा है। नीचे आपको रोक नहीं है।
- १.६ सत्य के मार्ग पर यात्रा करने के लिए। विवेकानंद सत्य के मार्ग पर यात्रा करना चुनते हैं। सत्य का मार्ग आसान नहीं है, हालांकि यह सबसे अच्छा है।

प्रश्न दो

- २.१ २.१.१ जंगल _____ (में , पर , से) सभी पशु पक्षी कैसे रहते थे ।
२.१.२ वीरबल _____ (के , को , से) देखकर अकबर को हँसी आ गई ।
२.१.३ दोनों बच्चे बुआ _____ (पर , की , का) बात ऐसे सुन रहे थे ।
- २.२ २.२.१ बकरी
२.२.२ गाय
- २.३ २.३.१ मैं अपना काम समय पर करता हूँ
२.३.२ वसुदेव श्रीकृष्ण के पिता थे ।
- २.४ ३.४.१ कौएँ
३.४.२ मुरगे
- २.५ २.५.१ वर्तमान काल
२.५.२ भविष्यत काल
२.५.३ भूतकाल
- २.६ २.६.१ नागरिक
२.६.२ पुस्तकालय
- २.७ २.७.१ इसका मतलब हल्का दिल होना है। इस बारे में गंभीर नहीं होना चाहिए।
हालांकि यह सिर्फ प्यार का विचार लाता है।
२.७.२ मैं पागल हो जाऊंगा। संदेश के संदर्भ में। वह अपना खोया हुआ सहन नहीं
कर पाएगा। वह शोक से पागल हो जाएगा
२.७.३ उन्होंने अभी-अभी शादी की है। उन्होंने वरमाला पहना हुआ है। उन्होंने
अपने शादी के कपड़े पहने हैं
२.७.४ भरोसा का अर्थ है किसी चीज में विश्वास रखना। किसी दूसरे व्यक्ति में
आत्मविश्वास होना।
२.७.५ एक नवविवाहित जोड़े के बारे में। हेडलाइन में सिर्फ एक हंसी के बारे
में बताया गया है। जीवन का हल्का पक्ष दिखाना।

भाग ख

साहित्य

प्रश्न ३ : कविता

चित्रकार और चित्र

- ३.१ इस कविता का केन्द्रीय विचार पर अपने शब्दों में समझाइए ? ।
- ३.२ कृपालु दीनदयाला कौसल्या के हितु प्रभू प्रकट हुए । मुनियों के मन को हरने वाले अनोखे रूपको देखकर माता प्रसन्न हुई ॥ सुन्दर नेत्र मेघ के समान सुन्दर शरीर चारों हाथों में अपने शस्त्र लिये आभूषण पहले कण्ठ में वनमाला धारण किए विशाल नेत्र शोभा के समुद्र खर राक्षस के मारने वाले श्रीहरि प्रकट हुए ॥
- ३.३ सभी अपने सुख के लिए जीते रहे किन्तु तुम तो संसार को सुखी बनाने के लिए जीते रहे । तुम ने तो मृत्यु को भी नये जीवन के समान स्वीकार किया । हम सभी को अपने कर्म को अपनाना होगा । बापू को जो एक बार और आना है । इस कविता में कहा गया है कि बहुत सारे काम किए जाने की जरूरत है ।
- ३.४ कवि कहते हैं कि इस ज़मीन हम किसी से नहीं छिना । यहाँ हम प्रकृतिक और यहाँ पर हम पालन पोषण भी हुए । हम अपने देश पर गौरव होना चाहिए । इस कविता में वह भारथवर्ष के गुणों पर प्रशंसा करते हैं । वह देश के सारे सौंदर्य को गौरव के साथ वर्णन करते हैं । कवि देशभक्ति कई शब्दों से इस कविता में प्रयोग किया है । जैसे : किरणों का उपहार । उषा अभिनन्दन । कमल कोमल । कविता को देश के धरातल पर कई सकारात्मक विवरणों के साथ लिखा गया है । कैसे प्रकृति ने भूमि को आशीर्वाद दिया है हम दिव्य आर्य बच्चे हैं । यह बताता है कि भूमि विशेष है । यह एक देहाती रवैये के साथ लिखा गया है ।

प्रश्न ४ : कहानी

पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर लिखिए :

- ४.१ शिवाजी बचपन से ही अपनी माता जीजाबाई के साथ पूना में रहता था। शाहजी का विश्वस्त मंत्रों दादाजी कोणददेव उसे विद्याभ्यास कराता था। इसका मन लिखने पढ़ने की अपेक्षा तीर मारने तलवार चलाने और घोड़े की सवारी आदि में अधिक लगाता था। दादाजी के पास महाभारत तथा रामायण की वीर रस पूर्ण कथाएँ सुनता
- ४.२ निर्भयचन्द और अभयचन्द सारी भीड़ को अपना तलवारों से चीरते हुए रानी के पास पहुच गए। उन्होंने रानी और उसकी सखियों को अपने बीच में कर लिया। केवल अभयचन्द ही बच रहा। अभयचन्द रानी को बचा लिया।
- ४.३ एक दिन धीरजसिंह राजदरबार से घर लौट रहे थे। रास्ते में हलवाई पूड़े बना रहा था। पूड़े देखकर धीरजसिंह के मुँह में पानी भर आया। उन्होंने मन हो मन सोचा। यूँ ही रुपए खर्चने से क्या। लाभ। जीभ का क्या। वह तो रोज ही ललचती रहती है।

Total: 100 marks